Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER

CANDIDATE NUMBER

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **February/March 2015**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (LK/SW) 91727/5
© UCLES 2015

CAMBRIDGE International Examinations

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–6

'दिल है हिंदुस्तानी' पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत अनगिनत भाषाओं का देश है, 'पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के मुताबिक यहां 850 से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं, जबकि पूरे यूरोप में केवल 250 भाषाएं ही बोली जाती हैं। यह हिंदी की मिठास ही है कि अमरीकी सरकार के ताज़ा आकड़ों के मुताबिक अमरीका में 6.5 लाख लोग अंग्रेज़ी की बजाय हिंदी बोलना पसंद करते हैं। ज़ाहिर है कि उनमें यहां से गए अधिकांश भारतीय ही होंगे। यही कारण है कि इस साल दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला लेने वाले विदेशी विद्यार्थियों में हिंदी को लेकर विशेष दिलचस्पी नज़र आई। दिलचस्प यह भी है कि अब चीनी विद्यार्थियों में भी हिंदी लोकप्रिय हो रही है।

हिंदी और उर्दू से अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाली क्रिस्टीन ब्राउन 1997 से भारत में रह रही हैं। हिंदी और उर्दू उनकी ज़िन्दगी में निर्णायक मोड़ लाई है क्योंकि इसको जानने की इच्छा ने ही इन्हें यहां आने पर मजबूर किया था। एक बार जो आईं, तो फिर लौटना नहीं हुआ। वह कहती हैं, "जब मैं लंदन विश्वविद्यालय में पढ रही थी, उसी समय हिंदी की ओर मन रम गया था।" हिंदी के बेहतर ज्ञान के लिए ही वह भारत आ गई। राही मासूम रज़ा और श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास और भीष्म साहनी की कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। इस काम से हिंदी को समझने में काफ़ी मदद मिली। वह मानती हैं कि किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता को ठीक से समझने के लिये वहां की भाषा को सीखना ज़रूरी है।

हिंदी भारत की पहचान है। बिना हिंदी के काम नहीं चलता है। हालांकि बहुत से लोगों को अंग्रेज़ी भी अच्छी आती है, लेकिन क्रिस्टीन ब्राऊन के मुताबिक, अंग्रेज़ी का महत्व बढ़ रहा है, उसके पीछे बड़ा कारण रोज़गार है, जिसमें अंग्रेज़ी वालों को महत्व मिल रहा है। बावजूद इसके हिंदी को अनदेखा नहीं किया जा सकता। क्रिस्टीन ब्राउन मानती हैं कि हिंदी का भविष्य अब भी अच्छा है। हिंदी भाषा में तेजी से बदलाव हो रहा है।

भारत की पहचान उसकी संस्कृति से है, जिसमें यहां की सभी भाषाओं की प्रमुख भूमिका है। हिंदी के बिना भारत के बारे में सोचना ही बेकार है, क्योंकि यहां के लगभग आधे लोग इसी भाषा में संवाद करते हैं और बाकी के बचे लोग भी इस भाषा को थोड़ा बहुत समझ ही लेते हैं। यहां आकर जिस तरह की आत्म संतुष्टि, भाषा-साहित्य को समझने का मौका मिला, वह कभी भी ब्रिटेन में रहकर नहीं मिल सकता था। क्रिस्टीन ब्राउन का मानना है कि हिंदी का भविष्य कभी अंधकारमय नहीं होगा।

1 अमरीका में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग कितनी है?

.... [1]

2 अमरीका के अलावा अब किन अन्य देश के विद्यार्थियों के बीच हिंदी लोकप्रिय बन रही है?

.... [1]

3 अनुवादक क्रिस्टीन ब्राऊन भारत क्यों आईं?

.... [1]

4 क्रिस्टीन ब्राउन के अनुसार किसी देश की भाषा सीखने से किन पक्षों के बारे में ज्ञान बढ़ता है?

.... [1]

5 क्रिस्टीन ब्राऊन के अनुसार अंग्रेज़ी का महत्व क्यों बढ़ रहा है?

.... [1]

6 क्रिस्टीन ब्राऊन को भारत आकर आत्मसंतुष्टि के साथ और क्या मिला?

.... [1]

[अंक: 6]

अभ्यास 2 प्रश्न 7

क्रिकेट के मशहूर खिलाड़ियों से मिलने का सुनहरा अवसर

केन्द्रीय खेल प्राधिकरण

लोधी रोड, दिल्ली।

दूरभाष 00-91-2898347745, 00-91-2889965735

स्कूली बच्चों के मनचाहे क्रिकेट खिलाड़ी के साथ अभ्यास शिविर में शामिल होने के लिए आवेदन

क्रिकेट के प्रति बढ़ती रुचि और प्रसिद्ध खिलाड़ियों और स्कूली छात्रों के बीच संवाद कायम करने के लिए दो हफ्ते की कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इस कार्यशाला में खेल संबंधी जानकारी और खेल के अभ्यास के दौरान स्कूली छात्रों को अपने चहेते खिलाड़ियों के साथ अभ्यास करने का अवसर मिलेगा। यह कार्यशाला पूर्णतः निःशुल्क है। यह पूरा आयोजन केन्द्रीय खेल प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। प्राधिकरण उन बच्चों को कार्यशाला में बुलाना चाहता है जो क्रिकेट के बारे में विशेष जानकारी रखते हैं। कार्यशाला में छात्रों की अधिक दिलचस्पी देखते हुए, सप्ताह के दौरान अथवा सप्ताहांत में किसी भी विकल्प को चुना जा सकता है।

कृष्ण की उम्र 16 वर्ष है। उसे क्रिकेट खेलने और देखने में बेहद दिलचस्पी है। पिछले 3 वर्षों से वह अपने प्रदेश में आयोजित प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच देख चुका है। वह अपनी स्कूल पत्रिका में क्रिकेट संबंधी कई दिलचस्प लेख भी प्रकाशित कर चुका है। वह भविष्य में टेलिविज़न या रेडियो पर क्रिकेट मैच का समालोचक बनना चाहता है। क्योंकि कृष्ण सप्ताह के दौरान अपनी अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहता है इसलिए उसके लिए सप्ताहांत में सुबह का समय ही सर्वाधिक उचित है। वह दिल्ली के साकेत कॉलोनी में अल्पना अपार्टमेंट के फ्लैट न. 57 में रहता है। उसका टेलिफोन न. 00-91-2349869251 और ई-मेल है kk49@yahoo.com

आप अपने को कृष्ण मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

खेल प्राधिकरण, लोधी रोड, दिल्ली।

दूरभाष 00-91-2898347745, 00-91-2889965735

आवेदक का नाम....कृष्ण ......

(सही का निशान लगाएं) आयु - 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ईमेल - ....

पूरा पता - ....

....

....

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सप्ताह के दौरान।

☐ सप्ताहांत में।

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सुबह 8 बजे से 12 बजे तक

☐ दोपहर 4 बजे से रात 8 बजे तक

खेल संबंधी अनुभव बताइए

....

....

....

[अंक: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

'टेलिविज़न को भी मात दे सकता है रेडियो' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

रेडियो एक ऐसा माध्यम है, जो सिर्फ़ ध्वनि यानी आवाज़ से फैलता है। जब से रेडियो शुरू हुआ, तब से ऐसे कई लोग आए जिन्होंने इस माध्यम को तराशा। एक ज़माना था जब ऑल इंडिया रेडियो बहुत अच्छा था। उस ज़माने में वहां जो संगीत बजाया जाता था, वह परंपरा का सार लेकर चलता था। साहित्य और कविता इसका आधार थे। भाषा को भी सीधा और सरल रखा गया था। एक वक्त ऐसा भी आया, जब ऑल इंडिया रेडियो में बहुत ज़्यादा गंभीरता आ गई। रोमांटिक गीतों की सूचना भी गंभीर स्वर में दी जाती थी। मगर जिस रेडियो में मिठास और अपनापन न हो वह ज़्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकता।

रेडियो का अंदाज़ अगर रोचक हो तो वह टीवी की भी बराबरी कर सकता है। रेडियो में उदघोषक या जॉकी सिर्फ़ बोलकर ही एक रंगीन दुनिया बना लेते हैं, जहां सुनने वालों पर प्रभावी असर छोड़ा जा सकता है। यह चमत्कार टीवी में नहीं है। अब ज़माना है एफ.एम. का। यह एक खुली हवा के झोंके की तरह आया है। इसमें रेडियो जॉकी खुलकर बात करते हैं। आमतौर पर अब तक लिखित सामग्री के आधार पर ही कार्यक्रम किए जाते थे। लेकिन आजकल एफ.एम. में रेडियो जॉकी को पटकथा अंदर ले जाने की इजाज़त नहीं होती। यह वाकई एक क्रांतिकारी बदलाव है।

जिंदगी में परंपरा और प्रगति को साथ जोड़े रखना बहुत ज़रूरी है। हमारे फिल्मी गाने पहले कैसे थे और कैसे पश्चिम का प्रभाव इन पर पड़ रहा है, यह साफ़ है। कम से कम दोनों तरह के संगीत को साथ लेकर चला जाए। हमारी आज की पीढ़ी को मालूम होना चाहिए कि हमारा संगीत क्या हुआ करता था। यह ज़िम्मेदारी रेडियो जैसे संचार माध्यम की बनती है। किसी भी संचार माध्यम को स्पष्ट, सरल, स्वाभाविक और सुंदर होना चाहिए।

रेडियो जॉकी बनने से पहले आपको अपने व्यक्तित्व को अच्छी तरह निखारना चाहिए। रेडियो पर जो लोग बोलते हैं, उन्हें भाषा का ख़ास तौर पर ध्यान रखना चाहिए। आपका व्याकरण शुद्ध हो। नई पीढ़ी अपने आस-पास के माध्यमों से ही तो सीखती है। लेकिन मैं देखता हूं कि आजकल के रेडियो जॉकी इस बात पर ध्यान नहीं देते। हां, कुछ लोग हैं जो बहुत अच्छे कार्यक्रम कर रहे हैं। रेडियो में ऊर्जा और मनोरंजन के साथ शिक्षा का समावेश भी होना चाहिए। इसके अलावा जिस तरह से रेडियो स्टेशन के बाहर भी अब कार्यक्रम तैयार होने लगे हैं, वह एक अच्छा कदम है। इन कार्यक्रमों से विविधता भी पैदा होती है।

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

आपके स्कूल में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है कैसे रेडियो को प्रभावी माध्यम बनायें? 'टेलिविज़न को भी मात दे सकता है रेडियो' नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपकी प्रस्तुति आधारित होगी।

8 पहले के रेडियो कार्यक्रमों के प्रमुख आधार क्या होते थे?

- .... [1]
- .... [1]

9 एफ.एम. के प्रस्तुतकर्ताओं ने प्रस्तुति के किन नये पक्षों को जोड़ा है?

- .... [1]
- .... [1]

10 एफ.एम. रेडियो को अपनी ज़िम्मेदारियां कैसे निभानी चाहिए?

- .... [1]
- .... [1]

11 रेडियो के प्रस्तुतकर्ताओं को किस निजी पहलू पर अवश्य ध्यान देना चाहिए

- .... [1]

[अंक: 7]

© UCLES 2015

अभ्यास 4 प्रश्न –12

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए और बताइए कि काम के घंटों में कमी करना कितना उचित होगा, आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं।
पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

आज हर व्यक्ति हरदम व्यस्त ही रहना चाहता है। लेकिन इस चाहत की कभी-कभी ख़ासी बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ जाती है। यही वजह है कि आज के कम उम्र लोग भी अक्सर गंभीर बीमारियों के शिकार नज़र आते हैं। हाल ही में कुछ लोगों ने एक नये शोध में बताया है कि अगर आप हर हफ़्ते कुछ कम घंटे काम करेंगे तो ज़्यादा स्वस्थ रह सकते हैं। इससे न सिर्फ़ आप अपना भला करेंगे बल्कि पर्यावरण और आर्थिक हालात सुधारने में भी मदद करेंगे।

अर्थशास्त्रियों का एक समूह यह सलाह दे रहा है कि सप्ताह में काम करने के घंटों में कमी की जानी चाहिए। इसे 40 घंटे से कम करके 30 घंटे प्रति सप्ताह कर देना चाहिए। जर्मनी, नीदरलैंड और बेल्जियम में तो पहले ही ऐसा कर दिया गया है। अच्छी बात यह है कि इससे काम बिलकुल प्रभावित नहीं होगा। सामाजिक नीतियों के प्रमुख निर्माता अन्ना कूटे के मुताबिक अपने लिए बहुत कम समय मिल पाना हमारे स्वास्थ्य और अच्छे इंसान बने रहने की राह में रुकावट बन सकता है। इससे हमारा पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन और दोस्ती तक खतरे में पड़ सकती है। किसी को भी इस कदर काम से नहीं लादा जा सकता कि वह इस वजह से असामाजिक ही हो जाए।

अगर काम करने वालों के बीमारी के चौथाई दिनों को देखा जाए तो उसके पीछे कामकाज से जुड़ी समस्याएं ही रहती हैं। साथ ही काम का दबाव और मानसिक बीमारियां भी इन लोगों में ज़्यादा नजर आ रही हैं। ज़्यादातर यूरोप की हालत यही है। यूरोपीय डिप्रेशन एसोसिएशन के एक सर्वेक्षण के मुताबिक हालत यह हो गई है कि चार में से एक ब्रिटिश कर्मचारी में तनाव की शिकायत पाई गई है। ग़नीमत है कि इटली में ऐसे लोगों की तादाद महज़ 12 फीसदी है। दुनिया के अनेक अर्थशास्त्रियों का मानना है कि काम के घंटों में कमी आने से कामकाजी लोगों की बीमारी भी कम होगी। ऐसे में वे उत्पादन में ज़्यादा सहयोग दे सकेंगे। यही नहीं, इससे बेरोज़गारों के लिए भी काम के नए अवसर तैयार हो सकते हैं। हो सकता है कि छोटे कामकाजी सप्ताह का मतलब कम पैसा मिलना बने, लेकिन यह समूचे पर्यावरण के लिए भी अच्छा रहेगा।

© UCLES 2015

‘क्यों कम होने चाहिए काम के घंटे’

[अंक:10]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 13–19

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजस्थान: मूँछें होगी तो मिलेगी नौकरी और भत्ता

राजस्थान में मूँछें बहादुर योद्धाओं और प्रतापी राजा महाराजाओं के व्यक्तित्व का अहम हिस्सा रही हैं। मूँछों पर मुहावरे बने और मर्दों की महफ़िल में मूँछों का बखान ऐसे होता रहा, जैसे वह मर्दानगी का प्रतीक हों। राजस्थान में अब मूँछें पर्यटन क्षेत्र में रोज़गार का ज़रिया बनी हुई हैं। पांच सितारा होटलों में दरबान की नौकरी के लिए घनी लम्बी मूँछें किसी डिग्री-डिप्लोमा की तरह रोज़गार हासिल करने में मदद करती हैं। कुछ बड़े होटल अपने ऐसे दरबानों को मासिक 'मूँछ भत्ता' भी देते हैं।

सैलानी सलामी देते बड़ी बड़ी मूँछों वाले दरबानों को यूँ निहारते हैं जैसे उसमें इतिहास की झलक दिख रही हो। लम्बे तगड़े सुरजीत सिंह पहले फ़ौज में थे, अब जयपुर के एक पांच सितारा होटल में दरबान हैं। उन्हें अपनी रौबीली मूँछों पर ताव देने के एवज में भत्ता मिलता है। अपनी मूँछों को बल देते हुए सुरजीत कहते है, "इन मूँछों को बड़े जतन से रखना पड़ता है। मूँछों की मालिश करनी पड़ती है, शैम्पू से धोना पड़ता है। इनकी सुरक्षा के लिए घर पर मूँछ पट्टी बांधनी पड़ती है। पर्यटक इन्हें देखकर ख़ुश होते हैं और कई बार ईनाम भी देते है, ये हमारी संस्कृति की पहचान हैं।"

जयपुर में राजपुताना शेरटन होटल के महा प्रबंधक सुनील गुप्ता बताते है, "दरअसल दरबान के व्यक्तित्व में उसकी कद काठी और मूँछें अहम होती हैं। जितनी बड़ी और फैलावदार मूँछें होगी, वह उतना ही आकर्षक लगेगा। होटल के प्रवेश द्वार पर खड़े ऐसे व्यक्तित्व से होटल के दर्जे का पता चलता है।" सुनील गुप्ता आगे कहते हैं, "राजस्थान, जिसे पुराने दौर में राजपुताना कहा जाता था, उसकी शान मूँछें रही हैं। होटलों पर तैनात द्वारपाल घी, शैम्पू और मुल्तानी मिटटी जैसे उपायों से अपनी मूछें पोषित करते हैं। क्योंकि जितनी न्यारी-प्यारी मूँछे, उतने ही अधिक रोज़गार के अवसर। अजमेर ज़िले में ब्यावर के कल्याण गुर्जर के रौबीले चेहरे पर चस्पा मूँछों ने उन्हें एक बड़े होटल में दरबान की नौकरी दिलाने में बड़ी मदद की।

कल्याण गुर्जर कहते हैं, "ये तो राजस्थान की संस्कृति है, फिर विदेशी इन्हें देखकर बड़े खुश होते हैं, साथ फोटो खिंचवाते हैं। जो फाइव स्टार होटल हैं, उनमें घनी मूँछों वालों को ही नौकरी में रखा जाता है, इसलिए मूँछें हमारे लिए डिग्री की तरह है।"

कृपया प्रश्न 13 से 16 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण – महफिल में मूँछों का बख़ान पुरूषों के उच्च सामाजिक स्तर का प्रतीक होता था।	☐	✓
औचित्य – मूँछों का बख़ान उनकी मर्दानगी का प्रतीक था।		
13 पांच सितारा होटलों में दरबान की नौकरी के लिए मूँछें डिग्री डिप्लोमा समान ही है।	☐	☐

....

14 दरबान की मूँछों में होटल का वातावरण झलकता है।	☐	☐

....

15 लंबे तगड़े सुरजीत शुरू से ही पांच सितारा होटल में दरबान का काम करते थे।	☐	☐

....

16 मूँछों पर ताव देने के लिए शुल्क देना पड़ता है।	☐	☐

....

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

17 दरबान की घनी मूँछें किसी होटल के बारे में क्या बताती हैं?

.... [1]

18 मूँछों पर घी क्यों लगाते है?

.... [1]

19 पर्यटक अपनी ख़ुशी कैसे प्रकट करते हैं?

.... [1]

[अंक:10]

अभ्यास 6 प्रश्न 20

क्या फेसबुक जैसे सामाजिक मीडिया का सदस्य बनना हितकारी है?

आपके स्कूल में एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है जिसका विषय है क्या फेसबुक का सदस्य बनना हितकारी है? इस भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए ऊपर दिये गए विषय पर अपना भाषण लिखें। आपका भाषण विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

आपका भाषण 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

लिखित भाषण पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंकों तक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंकों तक दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2015

[अंक: 20]

© UCLES 2015

BLANK PAGE

© UCLES 2015

BLANK PAGE

© UCLES 2015

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.